छत्तीसगढ़ पर्यटन उद्योग की सम्भावनाएँ

[1] मनोज कुमार साहू, [2] डॉ. इंदु संतोष
[1]शोधार्थी (वाणिज्य), [2]सह–प्राध्यापिका,
[1]वाणिज्य विभाग, [2] प्रबंधन विभाग,
[12]डॉ. सी. व्ही. रामन विश्वविद्यालय, कारगिरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.), भारत

सारांश – इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य छत्तीसगढ़ में पर्यटन की संभावनाओं को जानना है जिसके लिए विभिन साथियों का विवेचन किया गया ताकि छत्तीसगढ़ में उपलब्ध पर्यटन स्थलों की जानकारी जुटाई जा सके। छत्तीसगढ़ के नवीन राज्य है जिसकी स्थापना वर्ष 2000 में मध्य प्रदेश के विभाजन से हुई थी। छत्तीसगढ़ में पर्याप्त और अभूतपूर्व प्राकृतिक सौंदर्य की छठा विधमान है। दूर दूर से पर्यटक यहाँ के प्राकृतिक वातावरण और सौन्दर्य का लुफ्त उठाने की लिए वर्षभर यहाँ आते है। प्रकृति के आलावा ये प्राचीन इतिहास और सांस्कृतिक धरोहर का केंद्र रहा है और इतिहास के विभिन्न अध्ययों में इसके उल्लेख मिलते रहे है। साथ ही छत्तीसगढ़ धार्मिक तीर्थ स्थलों और आस्था का केंद्र भी रहा है। छत्तीसगढ़ एक ऐसा राज्य है जहा प्रकृति, धार्मिक, मनोरंजक और एतेहासिक पर्यटन स्थलों का अद्वितीय संगम पर्यटकों को प्राप्त होता है। लेखक ने अपने इस पत्र के माध्यम से पर्यटन बोर्ड को सलाह दी है की वह ज्यादा से ज्यादा पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए व्यापक रूप से छत्तीसगढ़ पर्यटन का प्रचार प्रसार करे और पर्यटकों को उनकी रूचि के अनुरूप ही सुविधाएँ प्रदान करने की चेष्टा करे।

कीवर्डः – पर्यटन, पर्यटन ब्रांड, सांस्कृतिक धरोहर, प्रकृति, धार्मिक, मनोरंजक, एतेहासिक पर्यटन /

I. परिचय

छत्तीसगढ़ भारत के ह्दय स्थल में स्थित है। यहॉ वनों की अधिकता तथा उस पर निवासरत् विविध प्रका के वन्य जीवों की अधिकता से इको पर्यटन की संभावनाएं यहॉ बलवती होती है। छत्तीसगढ़ में धान की खोती वाले विस्तृत मैदान मध्य में है परंतु इसके उत्तर व दक्षिण में पहाडियों वाले ऊॅचाई वाले स्थल हे जो पर्यटकों को आकर्षित करने में समक्ष है उत्तर पूर्वी छत्तीसगढ़ में सुरक्षा तथा स्वास्थ्यवर्धक पाट स्थल है। यहॉ नदियों में बांध बने है जिस पर साहसिक पर्यटन संभव है। छत्तीसगढ़ में 20000 से अधिक ग्राम है। पहाड़ियों में जनजातियों का निवास है। ग्रामीण संस्कृति तथा जनजातियों की सांस्कृतिक सम्पन्नता ग्रामीण पर्यटन की संभावनाओं को और बढ़ा देती है। छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों के आधार पर हम पर्यटन को निम्नांकित रूप से वर्गीकृत कर सकते हैंः–

II. छत्तीसगढ़ में हेरिटेज प्र्यटन स्थल

छत्तीसगढ़ में कई राजवंशों शरभपुरीय सोमवंश कल्चुरी वंश मराठा राज वंशों ने शासन किया। इन राजवंशों ने अपने समय में कई स्मारक मंदिरों महलो के रूप में निर्मित किये हैं उन्हें पुरातात्विक तथा इतिहास में रूचि रखने वाले पर्यटकों को छत्तीसगढ़ में पर्यटन के लिए जोडा जा सकता है।

1. **भोरमदेव मंदिर समूह** – छत्तीसगढ़ के कवर्धा जिले में भोरमदेव मंदिर तथा मडवा महल नागवंशी राजाओं ने निर्मित किया है। प्रसिद्ध भोरमदेव मंदिर का निर्माण 1089 ई में गोपाल देव द्वारा किया गया है। पत्थर से निर्मित बाहरी दिवारों पर धार्मिक तथा मिथुन मूर्तियों का अंकन हुआ है। मंडवा महल मंदिर का निर्माण 14 वीं सदी मे रामचन्देव राजा द्वारा कल्चुरी राजकुमारी से विवाह के लिए निर्मित किया गया था। इस मंदिर के दीवारों पर कई मिथुन मूर्तियों का अंकन हुआ है। मध्यप्रदेश या उड़ीसा के कोर्णाक सदृष देशी विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने में ये मंदिर सक्षम है।
2. **मल्हार का स्थल** – बिलासपुर जिले में मल्हार में प्राचीन सदी से 12वीं सदी तक के कई अवशेष प्राप्त हुए हैं। छत्तीसगढ़ की सबसे प्राचीन चतुर्भुज प्रतिमा यहॉ प्राप्त हुई है। यहॉ का पातालेश्वर मंदिर प्रांगण पर पुरातत्व विभाग द्वारा प्राचीन खुदाई से प्राप्त पत्थरों के मूर्तियों एवं निर्माण अवशेषों को रखा गया है। प्राचीन डिडनेश्वरी मंदिर की काली ग्रेनाइट मूर्ति चोरी हो जाने पर एक नवीन मंदिर भी निर्मित है। यहॉ देउर का शिवमंदिर पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम है। 4–5 वीं सदी में निर्मित यह मंदिर भीम कीचक मंदिर के रूप में विख्यात था। पुरातत्व विभाग के द्वारा इस मंदिर के खण्डहरों को संरक्षित रखा गया है। पर्यटक इसे देखकर निश्चित ही आनंदित होते हैं।
3. **सिरपुर का स्थल**– महासमुंद जिले में रायपुर संबलपुर राष्ट्रीय राजमार्ग के समीप इस स्थल में कई हिन्दु कलाओं की मूर्तियां तथा स्मारक प्राप्त होते हैं। यहॉ आनंद प्रभुकुटी बिहार स्वास्तिक बिहार तथा अनेक बौद्ध कलाओं की सामग्रियॉ मिली है। सिरपुर में ईंटों से निर्मित गुप्त कालीन लक्ष्मण मंदिर पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु है। गुप्त कालीन कला का इटों से निर्मित यह मंदिर भारत के मंदसौर के दशावतार मंदिर, टिगवा का शिवमंदिर तथा नचना कुठार के मंदिर के सदृश्य अभी भी बेहतर स्थिति में प्राप्त होता है। बौद्ध तथा हिन्दु कला प्रेमियों के लिए आकर्षण का बडा केन्द्र सिद्ध होगा।
4. **रियासत कालीन महल**– छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता के समय 14 रियासतें विद्यमान थी। इन रियासतों के राजाओं ने अपने लिए भव्य महलों का निर्माण किया है। रायगढ़ का मोती महल, सारंगढ़ का गिरी बिलास पैलेस, शक्ति, खैरागढ़, जगदलपुर एवं काकेर के पैलेस भव्य रूप में बनाये गये थे। उन्हें आधुनिक रूप से हैरिटेज होटल का नया रूप देकर पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है। राजस्थान के उदयपुर, जोधपुर के महलों को हैरिटेज होटल का रूप देकर विदेशी पर्यटकों को वहॉ के पर्यटन के लिए आकर्षित करने में सक्षम हुआ है।

5. **तालाग्राम**– बिलासपुर, रायपुर राजमार्ग पर बिलासपुर से 26 किलोमीटर की दूरी पर अमेरी–कॉपा नामक स्थल पर देवरानी–जेठानी मंदिर 5वीं–6वीं सदी में निर्मित 02 मंदिर प्राप्त होते हैं। देवरानी मंदिर पर 11 विभिन्न जीवों से निर्मित 6 टन पत्थर की विशालकाय रूद्र शिव की प्रतिमा प्राप्त हुई है। इन मंदिर समूहों को इतिहास पुरातत्व में रूचि रखने वाले पर्यटक अवश्य देखना चाहेंगें।

III. इको र्प्यटन स्थल

छत्तीसगढ़ में 44 प्रतिशत क्षेत्रों में साल एवं सागौन वृक्षों से आच्छादित वन क्षेत्र हैं। इन क्षेत्रों में प्राकृतिक पर्यटन में रूचि रखने वाले लोग छत्तीसगढ़ में आकृष्ट हो सकते हैं।

1. **राष्ट्रीय पार्क**– – छत्तीसगढ़ में तीन राष्ट्रीय पार्क हैं। छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग में बीजापुर में इन्द्रावती राष्ट्रीय पार्क सघन वनों से आच्छादित है। यहॉ शेर, तेंदुआ, हिरण, चित्तल, साम्भर तथा गौर मिलते हैं। कांकेर जिले में कांगेर वेली नेशनल पार्क में वनभैसे शुद्ध नस्ल के प्राप्त होते हैं। उत्तरी छत्तीसगढ़ के कोरिया एवं सूरजपुर जिलों में गुरूघासीदास राष्ट्रीय पार्क फैला हुआ है। यहॉ शेर, तेंदुआ, नीलगाय वन्य बहुतायत में प्राप्त होते हैं।
2. **वन्य जीव अभ्यारण्य**– छत्तीसगढ़ में 11 वन्य जीव अभ्यारण्य हैं इनमें तमोरपिंगला (सूरजपुर जिला), सेमरसोत अभ्यारण्य (बलरामपुर जिला), बारनवापारा अभ्यारण्य (महासमुंद जिला), गोमरडा (रायगढ़ जिला) अभ्यारण्य प्रमुख हैं। यहॉ नीलगाय, तेंदुआ, हिरण, चिंकारा एवं मोर बहुतायत में मिलते हैं। बारनवापारा अभ्यारण्य में छत्तीसगढ़ पर्यटन बोर्ड ने पर्यटकों के ठहरने के लिए मोटलों का निर्माण किया है। वन विभाग के डाक बंगले भी अन्य अभ्यारण्यों तथा राष्ट्रीय पार्क में ठहरने के लिए उपलब्ध है।
3. **जलप्रपात**– छत्तीसगढ़ में उत्तर तथा दक्षिण क्षेत्रों में बहने वाले नदियों ने कई सुन्दर प्रपात बनाये हैं। इन नदियों के द्वारा पहाड़ी से गिरते हुए प्रपात का दृश्य तथा आसपास के सघन वनों की हरियाली से सुन्दर मनोरम दृश्य पर्यटकों को सहज ही आकर्षित कर सकता है।

   (क) चित्रकोट जलप्रपात– छत्तीसगढ़ के दंतेवाडा जिले में बहने वाले नदी इन्द्रावती चित्रकोट जलप्रपात का निर्माण किया है। बरसात के दिनों में यहॉ लगभग पौवन किलोमीटर चौड़ा विपुल जलराशि का हजारों घनमीटर पानी लगभग 90 फीट ऊॅचाई से गिरता है। तब वहॉ नियाग्रा फॉल का दश्य साकार होता है। यह स्थल दंतेवाडा मुख्यालय से लगभग 40 किलोमीटर उत्तर पूर्व की ओर है। यहॉ देशी एवं विदेशी पर्यटक अधिक आकृष्ट होते हैं।

   (ख) तीरथगढ़ जलप्रपातः– कांगेरवेली राष्ट्रीय पार्क में कांगेर तथा मुनगाबहार नदियों के द्वारा बहते हुए मिलने के बाद छत्तीसगढ़ का सबसे ऊॅच जलप्रपात का निर्माण करती है। जलप्रपात का पानी यहॉ ऊॅचाई से गिरते हुए शुभ्रधवल कणों में मनोरम दृश्य उपस्थित करता है।

   (द्य) अन्य प्रपात– बस्तर क्षेत्र में दूधनदी का मलाजकुण्डम जलप्रपात हसदेव नदी का कोरिया जिले में अमृतजलधारा जलप्रपात, सूरजपुर जिले का रेण्ड नदी पर रक्सगंडा जलप्रपात, सरगुजा में सेदम जलप्रपात स्थित है। इन जगहों पर इकोट पर्यटन में रूचि रखने वाले काफी आकर्षित होंगे।

IV. साहसिक र्प्यटन वाले क्षेत्र

छत्तीसगढ़ में कई नदियां प्रवाहित होती है उस पर बड़े–बड़े बांध बनाये गये हैं। इन कृत्रिम जलाशयों पर साहसिक पर्यटन के लिए कई सम्भावनाएं बन सकती है।

1. **गंगरेल बांध (पं0 रविशंकर जलाशय)**– छत्तीसगढ का गंगरेल बांध महानदी पर धमतरी के पास निर्मित किया गया है। इसके लिए बड़े आकार का पं. रविशंकर जलाशय का निर्माण किया गया है। इस बांध को वर्षा के दिनों में देखना बड़ा सुखद होता है। इस पर बोट, स्टीमर की सुविधा बहुत अधिक उपलब्ध किया जावे तो साहसिक पर्यटन की बहुत सम्भावनाएं पैदा हो जावेगी।
2. **हसदेव बांगो बांध (मिनीमाता जलाशय)**– हसदेव नदी पर कटघोरा से 20 किलोमीटर दूर उत्तर में अम्बिकापुर मार्ग पर बांगों बांध छत्तीसगढ का सबसे ऊॅचा बांध है। यहॉ बोट उपलब्ध हैं यहॉ पर साहसिक पर्यटन के लिए और कई सुविधाएं विकसित किया जाना चाहिए।
3. **अन्य बांध**– रतनपुर का खुंटाघाट बांध, सोढुर बांध, पैरीनदी पर सिकासार बांध, मरियाली नदी पर खुडिया बांध तथा सिरपुर के पास कोडार बांध हैं इन सभी जलाशयों पर स्टीमर, बोट सुविधाएं विकसित किय जायें तो बहुत पर्यटक छत्तीसगढ़ भ्रमण के लिए आ सकते हैं।

V. छत्तीसगढ़ धार्मिक स्थल

प्राचीन काल तथा महाकाव्य काल से ही छत्तीसगढ़ का वर्णन प्राप्त होता है। रामायण युगीन भगवान रामचन्द्रजी माता कौशल्या की जन्मस्थली, रामचन्द्रजी के वनगमन के समय व्यतीत किया हुआ दण्डकारण्य क्षेत्र तथा राम के बेटे लव एवं कश की लीलास्थली के रूप में प्राचीन छत्तीसगढ़ कौसल क्षेत्र के रूप में चर्चित रहा है। महाभारत युगीन कौरवों एवं पाण्डवों के अनेक वृत्तांतो से जुडा यह क्षेत्र उस समय प्राक्कोसल के नाम से जाना जाता था। छत्तीसगढ़ में अनेक धार्मिक तीर्थस्थल है जो स्थानीय लोगों के विश्वास से जुडा हुआ है तथा उन्हें हमेशा धार्मिक भावनाओं से अभिभूत करते हैं। इसी कारण से छत्तीसगढ़ के इन स्थलों को स्थानीय लोगों के साथ भारत के अन्य राज्यों के पर्यटक भी देखना व घूमना पसंद करते हैं। इन धार्मिक स्थलों को हम निम्नांकित रूप से श्रेणीबद्ध कर सकते हैं।

1. **शक्ति पूजा वाले धार्मिक स्थल**– प्राचीन काल से ही छत्तीसगढ़ में शक्ति पूजा, मॉ दुर्गा के अनेक रूपों या नामों के आधार पर चली आ रही है। यहॉ चन्द्रपुर की चन्द्रहासिनी देवी, रतनपुर एवं अम्बिकापुर की महामाया, धमतरी की बिलंईमाता तथा दंतेवाडा की दन्तेष्वरी देवी के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है । यहॉ इन स्थलों के दर्शनार्थ उडीसा, मध्यप्रदेश तथा महाराष्ट्र के तीर्थ यात्री झुंड में पहुचते हैं। स्थानीय लोग इन मंदिरों में नवरात्र के अवसर पर जमीन लोट मारकर नापते हुए माता के दर्शन के लिए मनौती स्वरूप जाते हैं।
2. **रामायण कालीन तीर्थ स्थल**– भगवान राम से जुडे तथ्यों एवं अनुश्रुतियों के आधार पर लाखों लोग शिवरीनारायण के शबरी एवं नरनारायण मंदिर तथा राजिम के राजीव लोचन मंदिर की यात्रा पर माघ महीने में मेले में पहुचते हैं । अन्य स्थलों में रायगढ़ का रामझरना, बारनवापारा, अभ्यारण्य का वालमीकि आश्रम, सिहावा का अत्रि एवं श्रृंगी ऋषि के आश्रम पर विविध अवसरों पर भगवान राम पर आस्था प्रकट करने के लिए पर्यटक पहुॅचतें हैं।

3. **शैव तीर्थ स्थल**– छत्तीसगढ़ के प्राचीन राजवंशों यथा शरभपुरीय, सोमवश, कल्चुरी वंश इत्यादि में शिवपूजा के प्रमाण मिले हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में भगवान शिव की पूजा प्रत्येक दिन नहाने के बाद शिवलिंग पर एक लोटा पानी अनिवार्य रूप से अर्पित करने से शिवभक्ति का प्रमाण बताता है। सिरपुर का गंधेश्वर महादेव, राजिम का कुलेश्वर महादेव, चम्पारण का चम्पकश्वर महादेव प्रसिद्ध तीर्थस्थल है, यहॉ तीर्थ यात्री शिवरात्रि के अवसर पर एकत्रित होते हैं।
4. **बौद्ध धार्मिक स्थल**– छत्तीसगढ़ में सिरपुर में बौद्ध स्तूप तथ विहारों के अवशेषों के साथ बस्तर के भोंगाराम क्षेत्र में भी स्तूप के अवशेश प्राप्त हुए है। सिरपुर में स्थानीय अन्तर्राज्यीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध पर्यटक दर्शनार्थ आते हैं।
5. **जैन तीर्थ स्थल**– दुर्ग जिले में नगपुरा जैन धर्मावलम्बियों के लिए प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। इसके अतिरिक्त आरंग का बाघ देउल मंदिर तथा पंडरिया का क्षेत्र जैन मतावलम्बियों को आकर्षित करता है।

VI. पर्यटन उद्योग के लिए किए गए प्रयास

सन 2000 में छत्तीसगढ़ का नये राज्य के रूप में गठन हुआ । इसके पूर्व मध्यप्रदेश के अंग के रूप में छत्तीसगढ के पर्यटन स्थल का अधिक विकास नहीं हो पाया था । रायपुर, बिलासपुर, डोगरगढ़ जैसे कुछ शहरों में ही पर्यटन सुविधाएं विकसित हो पायी थी।

- **छत्तीसगढ़ पर्यटन बोर्ड का गठन**– छत्तीसगढ निर्माण के बाद सरकार के पर्यटन एवं संस्कृति विभाग में छत्तीसगढ में पर्यटन को उद्योग देने के लिए कई प्रयास किये गये सन 2007 में छत्तीसगढ़ पर्यटन बोर्ड का गठन किया गया। बोर्ड ने छत्तीसगढ के कई स्थानों पर होटलों, मोंटलों एवं अन्य सुविधाओं का निर्माण किया है। रायगढ़, जांजगीर, सिरपुर, बारनवापारा जैसे कई स्थानों पर पर्यटक आवास गृह बनाये गये हैं। परन्तु पर्यटक आवास गृह आज की स्थिति में ठीक से प्रबंधित नहीं हो पा रहे हैं। पर्यटन व्यवसाय को समृद्ध बनाने के लिए इनमें बेहतर प्रबंधन, नवीन आवास गृह तथा अन्य पर्यटक सुविधाओं को विकसित करने की आवश्यकता है।
- **राजमार्गों का विकास**– सरकार के द्वारा छत्तीसगढ में पर्यटकों की पर्यटन स्थल पर आवागमन सुव्यवस्थित ढंग से करने के लिए पक्के मार्गो का निर्माण किया गया है। छत्तीसगढ से होकर कई राष्ट्रीय राजमार्ग गुजरते हैं। इन राजमार्गो को फोरलेन का रूप दिया जा रहा है। सराईपाली–रायपुर राजमार्ग तथा बिलासपुर– रायपुर राजमार्ग फोरलेन का हो गया है। प्रदेश में अब पक्के सड़कों का जाल बिछ जाने से महाराष्ट्र राज्य जैसे पर्यटन स्थलों को पक्के मार्गो से जोड़ने में राज्य सक्षम हुआ है।
- **परिवहन सुविधाएं**– प्रदेश के नया रायपुर में विवेकानंद हवाई अड्डा स्थापित किया गया है। देश के महानगरों दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, हैदराबाद, विशाखापटनम तक सीधी हवाई उड़ाने इस हवाई अड्डे से होती है। यहॉ एयर इंडिया, जेट एयर वेज, इंडिगो की उड़ाने होती है। रायपुर से जगदलपुर, अम्बिकापुर तथा बिलासपुर जैसे छत्तीसगढ के शहरों को हवाई यात्रा से जोड़ने के लिए एयर इंडिया की उड़ाने विकसित की जा रही है। इस सुविधा से विदेशी पर्यटकों को सुदूर एवं अंदरूनी छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों तक खिचने में कारगर होगी। मुम्बई–हावडा रेल मार्ग, बिलासपुर–कटनी दिल्ली रेलमार्ग के पुरानी सुविधाओं के अतिरिक्त छत्तीसगढ में कई रेल कारीडोरों का निर्माण हो रहा है। इन कारीडोरों के निर्माण से सरगुजा क्षेत्र के पर्यटन स्थलों तक पहुॅच के लिए रेल सुविधाएं निर्मित हो जायेगी।
- **निजी क्षेत्रों द्वारा किए गए प्रयास**– छत्तीसगढ के कई शहरों में उद्यमियों ने पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए होटलों, आवास गृह एवं टूरिस्ट काटेजों का निर्माण किया है। रायपुर, बिलासपुर एवं रायगढ़ जैसे शहरों में मंहगें होटलों का निर्माण किया है। इसके अतिरिक्त पर्यटन स्थलों भोरमदेव जगदलपुर, महासमुंद जैसे छोटे शहरों के पास भी होटलों एवं काटेजों का निर्माण इनके द्वारा किया गया है। रायपुर, बिलासपुर में कई व्यावसायिक मॉलों का निर्माण किया गया है। क्रीडास्थलों एवं मनोरंजन स्थलों का भी निर्माण किया गया है। फिर भी निजी क्षेत्र को छत्तीसगढ के अंदरूनी हिस्सों में भी पर्यटन सुविधाओं के लिए विनियोग करना होगा तभी छत्तीसगढ में पर्यटन उद्योग समृद्ध हो पायेगा।

VII.निष्कर्ष

छत्तीसगढ के पर्यटन संभावनाओं को बढ़ाने के लिए राज्य ने एक संस्कृति विकसित करने की जरूरत है। उत्तराखण्ड, राजस्थान तथा सिक्किम जैसे राज्यों में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने के लिए, सरकार, संस्थाएं, उद्योग एवं निजी उद्यमी प्रयास है। वहॉ की जनता ने भी अपनी संस्कृति को नवीन रूप देकर पर्यटकों को अपने राज्यों में पर्यटन के लिए आकृष्ट किया है। छत्तीसगढ में साहसिक, हेरिटेज, इको तथा मेडिकल पर्यटन स्थल उपलब्धता के कारण यहॉ भविष्य में पर्यटन उद्योग के लिए असीम संभावनाएं बनती है। पर्यटन बोर्ड को इस बात पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है की वह पर्यटकों की इच्छाओं के अनुरूप की सुविधाओं का निर्माण कराएँ। साथ ही जो सुविधाएँ जैसे लाज, मोटल, गेस्ट हॉउस आदि का निर्माण कराया गया है उनका रखरखाव व्यवस्थित करें ताकि आने वाले पर्यटकों को बेहतर सुविधाएँ प्राप्त हो सके। ज्यादा से ज्यादा पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए बोर्ड को व्यापक रूप से विशिष्ट पर्यटक स्थलों का उनकी विशेषताओं के साथ व्यापक रूप से प्रचार प्रसार करने की आवश्यकता है ताकि छत्तीसगढ़ पर्यटन को भी देश एवं विदेश में एक पर्यटन ब्रांड बनाया जा सके। पर्यटन एक मल्टीप्लायर इफेक्ट बनता है जहाँ पर्यटन से जुड़े कई व्यवसाय स्थापित कर लोग स्व–व्यवसायी बन अपने जीवन का निर्वहन कर सकते है। साथ ही यह प्रदेश की अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्रदान करता है। इसके लिए सभी को कृत संकल्पित होकर कार्य में जुटने की जरूरत है।

संदर्भ सूचि

[1] यंग, जार्ज (1970) टूरिज्म ब्लैसिंग एण्ड ब्लाइट, बैलग्वइन बुक्स, हामोन्टुस वर्थ, इग्लैण्ड, पृ. 10–11.

[2] ज्योतिर्मयी, आर.एस., वेंकटेशवरा, आर.बी. और दुर्गा राव एस. (2012). रुरल एंड इको टूरिस्म इन इंडिया दृ प्रोब्लेम्स एंड प्रोस्पेक्टस एनवायर्नमेंटल इम्पैक्टस ऑन टूरिस्म. *द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिजनस एंड मैनेजमेंट*, 1: 1–5.

[3] सिम्मोंस, डी. (1994). कम्युनिटी पार्टिसिपेशन इन टूरिज्म प्लानिंग. *टूरिज्म मैनेजमेंट*, 15: 98–108.

[4] डोव्लिंग, आर. (1993). एन एनवायरनमेंटली बेस्ड प्लानिंग मॉडल फॉर रीजनल टूरिज्म डेवलपमेंट. *जर्नल ऑफ सस्टेनेबल टूरिज्म*, 1: 17–37.

[5] आर्चर, बी. एच. (1982२). द वैल्यू ऑफ मल्टीप्लायर एंड देयर पालिसी इम्प्लीकेशन. *टूरिज्म मैनेजमेंट*, 3: 236–241

[6] विभाष कुमार झा, डॉ0 सौम्या नैयर, छत्तीसगढ़ समग्र, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी,

[7] संजय त्रिपाठी एवं श्रीमती चंदन त्रिपाठी, छत्तीसगढ वृहद् संदर्भ, उपकार प्रकाशन,

[8] दैनिक भास्कर के छत्तीसगढ विशेषांक

[9] हरिभूमि समाचार पत्र के छत्तीसगढ पर विशेषांक

[10] छत्तीसगढ पर्यटन मंडल की वेबसाईट cgtourism.choice.gov.in